Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LI (51), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

कबीर का समाज दर्शन: मध्यकालीन भारत में एक क्रांतिकारी स्वर

डॉ. राजाराम परते*

* सहायक प्राध्यापक, शासकीय महाविद्यालय, बिजावर, जिला-छतरपुर (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – मध्यकालीन भारत में कबीर (14वीं – 15वीं शताब्दी) एक निर्गुण संत कवि थे जिनकी वाणी सामाजिक समता, मानवता और एकात्मवाद पर आधारित थी। उन्होंने जाति-पांति के विभाजन, धार्मिक आडम्बर, पाखंड और अंधविश्वासों की तीखी आलोचना की। कबीर का मूल संदेश था कि सम्पूर्ण मानव एक ही है और परमात्मा एक है। उनकी सरल, साहसी और तर्कपूर्ण भाषा आज भी अत्याधुनिक लगती है। कबीर के दोहे आज भी धर्म निरपेक्षता, सामाजिक समानता और आत्मिक चिंतन के प्रतीक हैं।

शब्द कुंजी – एकात्मवाद, आडम्बर, पाखंड, अंधविश्वास, कटाक्ष, निर्विवाद, उलटबॉसिया, बौराना।

प्रस्तावना

कबीर की वाणी में सामाजिक दृष्टिकोण– कबीर की भाषा में सामान्य मानवता पर बल मिलता है। वे कहते है कि सबका जन्म एक समान मार्ग से हुआ हैं –

'एक बूंद एके मल-छूतर,
एक चॉद एक गूदा;
एक जोति तैं सब उत्पन्न,
कौन बरून कौन सूदा।'

(मतलब – एक ही माटी से सब उत्पन्न हुए हैं, सब एक ही प्रकाश से निकले हैं।)

कबीर संसार को माया-मृगतृष्णा मानते है वे जीवन में दिखने वाले भेद-भाव को अस्थायी और झूठा कहते हैं। उनके अनुसार माता-पिता, जाति, संपत्ति आदि दिखावे है, अंतत: सब अकेले आते है और अकेले जाते है। उन्होंने अंर्तमुखी भक्ति पर जोर दिया। कबीर के लिए पूजा-पाठ नहीं बल्कि ईश्वर की याद और सच्ची भक्ति महत्व रखती है। उन्होंने अपने पदों में कहा है कि शरीर का हदय और मन यदि परमात्मा में लीन हो जाये तो पूजा का अर्थ बनता है। कबीर हदय की शुद्धि पर बल देते हुए कहते है:-

'माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर।
करका मनका डार दे, मनका मन का फेर।'

जाति, धर्म पाखंड और सामाजिक भेद-भाव का विरोध– मध्ययुगीन भारत में वर्ण-व्यवस्था, जाति व्यवस्था बहुत प्रबल थी कबीर ने इसे तर्कपूर्ण ढंग से नकारा है।

जाति व्यवस्था– समाज में जाति आधारित भेद-भाव बहुत गहरा था। ब्राम्हणों का उच्च स्थान था जबकि शुद्रों और अछूतों को हेय दृष्टि से देखा जाता था। कबीर ने इसका कड़ा विरोध किया। वे कहते हैं :-

'**जात न पूछों साधु की पूछ लीजिए ज्ञान।**
मोल करो तलवार की, पड़ा रहन दो म्यान।'

वे जाति व्यवस्था को मानवता के विरूद्ध मानते है उनका कहना है –

'सबै जाति कहाइ के कहां जाति के बाप।'

धार्मिक पाखंड– तत्कालीन समाज में हिन्दु और मुस्लिम समुदायों में कर्मकाण्ड, आडम्बर और पाखंड व्याप्त थे। कबीर ने हिन्दु मंदिरों और मस्जिदों दोनों की आडम्बर युक्त धार्मिकता की जमकर आलोचना की। हिंदुओं के लिए वे कहते हैं-

'**पाहन पूजे हरि मिले, तो मैं पूजूं पहार।'**

इस दोहे में कबीर का मूर्ति पूजा के प्रति घनघोर विरोध दिखाई पड़ता है। (यदि पत्थर की पूजा से भगवान मिलते तो हम पहाड़ की पूजा करते। इससे तो भली चक्की है जिससे रोटी तो मिलती है)

इसी तरह मुसलमानों के लिए वे कहते है –

'**कांकर पाथर जोरि के मस्जिद लई चुनाय।**
ता चढ़ि मुल्ला बांग दे, क्या बहरा हुआ खुदाय।'

कबीरदास ने जन्म आधारित ऊॅच-नीच को अनुचित ठहराया और ब्राम्हणों के इस विचार का मजाक उड़ाया। एक दोहे में उन्होंने पूछा:-

'काहे को कीजैं पाण्डे छूत विचार,
छूतही ते उपजा सब संसार।'

इसके माध्यम से कबीर ने दिखाया कि समाज में छुआछूत और जाति भेद बेमानी है। कबीर ने कहा कि हिन्दु राम का नाम लेते है और मुसलमान रहमान का, फिर भी दोनों एक दूसरे से लड़ते है। उनका तर्क था कि एक ही सर्वेश्वर है, जिसे हिन्दु राम, मुसलमान अल्ला या रहमान कहता है।

सामाजिक भेद-भाव पर विद्रोह– कबीर ने छोटे और बड़े का विचार खत्म करने की बात कही है। उनके अनुसार सभी मनुष्य एक सामान है इसलिए जाति या वर्ण के आधार पर किसी को नीचा नहीं आंकना चाहिए। उन्होंने ऊॅच-नीच को अंधविश्वास कहा और इसे तोड़ने के लिए काव्य को हथियार बनाया।

मध्यकालीन भारतीय समाज की संरचना एवं कबीर – मध्य युगीन भारत में समाज वर्ण और धार्मिक पहचान पर आधारित था। हिन्दु समाज में वर्ण व्यवस्था (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र आदि) सख्ती से लागू थी, और निम्न वर्ग समाज की मुख्य धारा से वंचित था। दूसरी ओर उस समय उत्तर भारत में इस्लाम भी फैल चुका था कई निम्न जातियों ने इस्लामिक संस्कृति

स्वीकार की थी। इस प्रकार दोनों ओर जाति आधारित सामाजिक विभाजन था, साथ ही साम्प्रदायिकता का भी विष भी फैल रहा था। कबीर खुद निम्न जाति के जुलाहा परिवार में जन्में थे, जो हाल में इस्लाम स्वीकार कर चुका था। यद्यपि उनके गुरू वैष्णव सनातनी रामानंद थे। कबीर अपनी इच्छा से किसी भी सम्प्रदाय से बंधे नहीं रहे। इसलिए हिन्दु मुस्लिम दोनों संस्कृतियों का अनुभव होने के कारण दोनों धर्मो के रूढ़ियों से परिचित थे। उनकी वाणी में दोनों धर्मों के प्रति सम्मान देखा जा सकता है। वे राम और रहीम को समान रूप से देखते थे। दोनों की कट्टर प्रथाओं पर एकसमान व्यंग करते थे। कबीर अंधविश्वास, व्यक्ति पूजा, पाखण्ड और ढोंग के विरोधी थे। उन्होंने भारतीय समाज में जाति और धर्मो के बंधनों को तोड़ने का कार्य किया। इनकी रचनाओं में उत्तर और मध्यभारत के भक्ति आंदोलन को गहरे तक प्रभावित किया। उनके बारे में कथन है:-

'भक्ति द्राविण उपजी, लाये रामानंद
परगट किया कबीर ने, सात दीप नौ खण्ड।'

कबीर एक सर्वोच्य ईश्वर में विश्वास रखते थे। उनके जीवन काल के दौरान हिन्दु और मुसलमान दोनों ने उनका अनुसरण किया। कबीर का जीवन शान्तिमय था। वे अहिंसा, सत्य, सदाचार आदि गुणों के प्रशंसक थे। अपनी सहजता , साधु स्वभाव के कारण आज विदेशों में भी उनका समादर है।

कबीर का समाज सुधारक एवं क्रांतिकारी स्वरूप - कबीर भारतीय एवं परंपरा के एक ऐसे अद्धितीय संत है जिनका व्यक्तित्व समाज सुधारक और क्रांतिकारी दोनों रूपों में दिखाई देता है उन्होंने ऐसे समय में जन्म लिया जब भारतीय समाज जातिवाद, धार्मिक पाखण्ड, अंधविश्वास और सामाजिक विषमता से ग्रस्त था। कबीर ने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज में फैली कुरीतियों का तीव्र विरोध किया। कबीर ने स्त्री-पुरूष, अमीर-गरीब, ऊँच-नीच सबकों एक समान माना और भेद-भाव का विरोध किया। नारी सम्मान की वकालत करते हुए उन्होंने नारी को केवल भोग्या नहीं बल्कि जीवन की जन्मदात्री और साथी माना।

कबीर ने निडर होकर दोनों धर्मो के ठेकेदारों की अलोचना की। उन्होंने मूर्तिपूजा, तीर्थयात्रा, रोजा-नमाज, वेद पुराण आदि की सार्थकता पर प्रश्न उठाया। कबीर बिना किसी भय के समाज की गहरी बुराईयों पर चोट करते रहे:-

'साधु ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय।
सार-सार को गहि रहे, थोथा देई उड़ाय।'

मूर्ति पूजा का खुलकर विरोध करते हुए कबीर कहते हैं -

'पाथर पूजे हरि मिले, तो मैं पूंजू पहार
घर की चाकी कोई न पूजे, जा को पीसे संसार।'

तीर्थ यात्रा के संबंध में कबीर कहते हैं :-

'तीर्थ गए तो क्या भया, मन न बदला आप।
मन ही मन को मारिये, यह तीरथ सबसे आप।'

रोजा नमाज के संबंध में कबीर कहते हैं -

'हरि को भजे सो हरि का होई, मुसलमान का करे निवाज।
दिल भीतर का जो न सांचे, ताको झूठी रोजा नमाज।'

वेद पुराण की सार्थकता पर प्रश्न करते हुए कबीर कहते हैं -

'पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोई।
ढाई आखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होए।'

मानव धर्म के पक्ष में उन्होंने ईश्वर को मंदिर-मस्जिद में न मानकर हर जीव में देखा हैं -

'माटी एक धरती सबका, एकैं ही है देह।
कह कबीर सुनो भाई साधौं, राम बसे सब मेह।'

कबीर का कवि स्वरूप और समाज सुधारक चरित्र जुड़कर उनका क्रांतिकारी व्यक्तित्व बनाते हैं। उन्होंने अपने उग्र और व्यंग्यपूर्ण दोहों से भ्रष्ट सामाजिक मूल्यों पर चोट की। इसलिए कई विद्धानों ने उन्हें निर्विवाद रूप से समाज सुधारक माना है। कबीर की कविताओं में कटु व्यंग्य और विद्रोह का स्वर है। उन्होंने उन अनैतिक रीति रिवाजों को तोड़ा जो समाज में बुरी प्रथाएं बन चुके थे।

कबीर की विचारों की प्रासंगिकता - कबीर केवल एक संत नहीं थे वे एक सामाजिक क्रांति के अग्रदूत थे। उन्होंने मानवता प्रेम, समानता और सत्य के आधार पर समाज को नया दृष्टिकोण दिया। कबीर के विचार आज भी प्रसांगिक है, क्योंकि आधुनिक समाज में भी जातिवाद, साम्प्रदायिकता और पाखण्ड फैले हुए है वर्तमान युग में उनके दोहो को लेकर अलग-अलग चर्चा होती है क्योंकि उनकी सीधी और साहसी भाषा सतत सत्ता और सामाजिक बुराईयों पर प्रश्न खड़ा करती है। आज जहां राजनीति में साम्प्रदायिकता बढ़ रही है और समाज में नये-पुराने भेद दिखते हैं, वहीं कबीर के उपदेश शांति, मानवता और एकता का मार्ग दिखाते है। कबीर कहते हैं-

'साधो, देखो जग बौराना...
हिंदु कहत है राम हमारा, मुसलमान रहमाना.....
आपस में दऊ लड़े मरत है मरम कोई नाहिं जाना।'

उनका यह दोहा आज के साम्प्रदायिक दंगों पर चोट करता है और बताता है कि दोनों धर्म सत्य से दूर झूठे नामों के बहाने एक-दूसरे से लड़ते है। उनकी विचारधारा को वर्तमान लेखकों एवं शिक्षाविदों ने भी स्वीकार किया है। आधुनिक भारत के सामाजिक आंदोलन में कबीर के विचार प्रेरणा देते हैं कि जाति-धर्म भेद और पाखण्ड को त्यागकर मानवता धर्म अपनाना चाहिए।

निष्कर्ष - मध्यकालीन समाज के कट्टर विभाजन और पाखण्ड के बीच कबीरदास ने सभ्यता बदलने वाली बात कही है। उनकी वाणी में जाति-धर्म के आधार पर बनाए गए भेद-भाव को खुलकर चुनौती दी है। समाज में व्याप्त अंधविश्वासों और दिखावों को सबके सामने लाकर उखाड़ फेकने का कार्य किया हैं। परिणामस्वरूप कबीर को केवल कवि ही नहीं, समाजसुधारक और क्रांतिकारी विचारक भी माना गया। आज भी उनकी रचनाओं में प्रेरणा के स्त्रोत हैं जो हमें मानव धर्म की याद दिलाते हैं। कबीर की जाति-वादी व्यवस्था के विरोधी विचारों ने बाद में दलित आंदोलन को प्रेरित किया। डॉ. धर्मवीर भारती समेत कई आधुनिक दलित विचारकों ने कबीर को अपना मार्गदर्शक माना है। कबीर की वाणी ने ही दलितों में आत्मसम्मान और संघर्ष की चेतना भरी। उन्होंने धर्म, सम्प्रदायिकता के सीमित बंधनों से ऊपर उठकर सर्वधर्म समभाव का संदेश दिया। इतिहासकार हरवंश मुखिया के अनुसार कबीर ने 'प्रतिद्वंदी ईश्वर की अवधारणा को छोड़कर एक सार्वभौमिक ईश्वर की परिकल्पना दी।'

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1. www.ebooks.inflibnet.ac.in
2. www.thewirehindi.com